SOCIAL PSYCHOLOGY

B.A. (Hons) Part-III
Paper-V

By- Dr. Ramendra Kr. Singh
HOD
Deptt of Psychology
D.K. College, Dumraon (Buxar)
V.K.S.U, Ara

SOCIAL TENSION

सामाजिक तनाव एक विश्वव्यापी समस्या है। दुनिया के प्रायः सभी देश इस सामाजिक-विकृति से ग्रस्त हैं। सम्प्रति हमारे देश के लिये यह एक गंभीर चुनौती बनी हुई है। सामाजिक समरसता को ~~लिये~~ यह अन्दर ही अन्दर खोखला कर रहा है, ऐसी परिस्थिति में इसके कारणों को जानना एवं निराकरण के उपायों को ढूंढना समाजमनोवैज्ञानिकों के लिये यह एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी बन जाती है।

सामाजिक तनाव एक ऐसी चिन्ता, अशान्ति एवं बेचैनी की स्थिति होती है, जिससे पूरा समाज पीड़ित होता है। यदि हम इसे परिभाषित करना चाहें तो कह सकते हैं कि -

"सामाजिक तनाव से तात्पर्य उस सामाजिक स्थिति से है जिसमें समाज या समूह के सभी या अधिकांश सदस्य अशांति तथा बेचैनी महसूस करते हैं और पेशीय तनाव के भावों से पीड़ित होते हैं।"

इस तरह उपर्युक्त परिभाषा से यह स्पष्ट हो जाता है कि सामाजिक तनाव एक खिंचाव की स्थिति होती है जो दो समुदायों या वर्गों के बीच होती है। जब यही खिंचाव की स्थिति दो सम्प्रदायों के बीच होती है तो Communal tension कहलाता है और जब दो जातियों के बीच होती है तो Caste riot कही जाती है। ध्यान देने वाली बात यह है कि सामाजिक तनाव जान बूझकर किया गया विरोध या प्रतिरोध होता है लेकिन कभी-कभी

प्राकृतिक प्रकोप या अकस्मात घटित घटनाएँ भी इसका कारण बन जाती हैं, जैसे रामनवमी एवं मुहर्रम के समय में खास क्षेत्र के लोगों में एक तरह की सामाजिक तनाव की स्थिति देखी जाती है। इसी तरह बाढ़ या भूकम्प का बार-बार तबाही मचाना भी सामाजिक तनाव की हालात पैदा कर देता है।

सामाजिक तनाव का स्वरूप

उपर्युक्त विवेचन से सामाजिक तनाव की कुछ विशेषताएँ अथवा स्वरूप उभर कर आता है उसे हम निम्न प्रकार से प्रस्तुत कर सकते हैं :-

(1.) तनावपूर्ण स्थिति :- सामाजिक तनाव की यह सबसे बड़ी विशेषता है। समाज के अधिकांश लोगों में तनाव, बैचेनी एवं चिंता की स्थिति देखी जाती है। सभी लोग अशांति महसूस करते हैं। जैसे हाल ही में सरकार द्वारा समान नागरिकता कानून लागू किये जाने से कई इलाके में सामाजिक तनाव की स्थिति बनी हुई थी। इसी तरह बाबरी मस्जिद-राममंदिर विवाद में जिस दिन उच्चतम न्यायालय का निर्णय आने वाला था, उस दिन ~~कुछ~~ से लेकर कुछ दिनों बाद तक पूरे देश में एक तरह का social tension जैसा माहौल बना हुआ था।

(2.) चिन्तागस्त स्थिति :- सामाजिक तनाव के हालात में लोगों में चिंताएँ बढ़ जाती है। समाज के अधिकांश लोग किसी समस्या को लेकर चिंतित रहते हैं। लोगों में यह आशंका व्याप्त हो जाती है कि समाज में खून खराबा होनेवाला है आदि-आदि। इस स्थिति में लोगों की नींद हराम हो जाती है।

(3) पेशीय तनाव का भाव :- सामाजिक तनाव के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि अधिकांश लोग सजग एवं बेचैन रहने लगते हैं जिससे अधिकांश लोगों में Muscular Strain उत्पन्न हो जाता है।

(3) द्वन्द्व का लक्षण :- सामाजिक तनाव में कभी-कभी द्वंद्व का भाव देखा जाता है जो साम्प्रदायिक दंगा का कारण बन जाता है। सामाजिक तनाव की हालात में लोग दूसरे समाज के लोगों से कट कर रहने लगते हैं तथा नकारात्मक भाव रखने लगते हैं। अपने देश में या खासकर कई बार ऐसी स्थितियाँ देखने को मिलती रहती है।

(4) वर्ग संघर्ष के लक्षण :- सामाजिक तनाव में दो वर्गों के बीच भी मनमुटाव एवं नफरत का भाव देखा जाता है। सब दूसरे को हितदृष्टि से लोग देखने लगते हैं। जैसे मंडल कमीशन के समय पूरा समाज बँटवारा एवं फॉरवार्ड की भावना में जल रहा था।

(5) अस्पष्ट भाव :- सामाजिक तनाव के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि कभी कभी इसका स्वरूप अस्पष्ट होता है तनाव के कारणों का पता ही नहीं चल पाता है। अधिकांश लोग तनाव में आ जाते हैं जबकि उसका वास्तविक कारण का पता ही नहीं चल पाता।

(6) आवश्यकता एवं लक्ष्य :- सामाजिक तनाव के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि इसके पीछे किसी न किसी आवश्यकता की पूर्ति का लक्ष्य होता है। लोगों में खास लक्ष्य को पूरा करने के लिए चिंता एवं सजगता बनी रहती है।

सामाजिक तनाव के प्रकार

सामाजिक तनाव कई प्रकार के होते हैं जिनमें से कुछ प्रमुख का नाम नीचे उल्लेखित किया जा रहा है :-

(1) साम्प्रदायिक तनाव :- यह दो सम्प्रदायों के बीच का तनावपूर्ण स्थिति होती है।

(2) जातिगत तनाव :- जब समाज के दो जातियों के बीच तनाव की स्थिति बनी रहती है, या किसी बात के लिए खींचाव बना होता है तो caste tension कहा जाता है।

(3) वर्ग तनाव :- यह दो वर्गों के बीच की खींचाव की स्थिति होती

है।

(5) क्षेत्रीय तनाव :- यह दो क्षेत्रों के बीच के लोगों में व्यापक तनाव होता है। जैसे कावेरी जल विवाद दो राज्यों के बीच की तनाव की स्थिति पैदा किये रहता है।

इस प्रकार उपर्युक्त वर्णन से सामाजिक तनाव एवं स्वरूप (विशेषताओं) पर बहुत हद तक प्रकाश पड़ जाता है। यह कई प्रकार के हो सकता है तथा इसके उद्भव, स्वरूप एवं प्रभाव अलग अलग हो सकते हैं। इसीलिए सर्जेंट ने कहा है।

"संघर्ष सदैव जारी नहीं रहते, वे कभी उत्पन्न होते हैं और कभी सामाजिक सम्बन्धों के कारण बन्द भी हो जाते हैं।"

10.08.2024

(5) (ग) त्रिवर्णध्वजस्य उत्तोलनं स्वतंत्रता दिवसे भवति
(घ) अशोक-चक्रे चतुर्विंशतिः अराः सन्ति।

(5) प्रश्न निर्माणं कुरुत
(क) कः (ख) किम् (ग) कस्याः (घ) केषाम्

(6) रिक्त स्थानानि पूरयत
अग्निशिखा। अग्निशिखयोः, अग्निशिखासु
ऊर्जा - चतु० - ऊर्जायै ऊर्जाभ्यः
अहिंसा - द्वि० - अहिंसे अहिंसाः
सफलता - प० - सफलतायाः सफलताभ्यः
सूचिका - तृ० - सूचिकाभ्याम् सूचिकाभिः

(7) समुचित मेलनं कृत्वा लिखत -
(क) - 3
(ख) - 4
(ग) - 1
(घ) - 5
(ङ) - 2